दिनांक :- 25-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फाल्गुन आजम (अतिथि शिक्षक)
स्नातक :- प्रथम ईयर कला
सेमेस्टर :- चतुर्थ
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
अध्याय :- प्रारंभिक काल के स्त्रोत -
पत्र :- एक

अल्टेनबर्ग के अनुसार विदथ का कार्य सम्भवतः जन जाति के लिये नियम निर्धारित करना तथा उसके कार्यक्रमों नियोजित करना था।

प्रशासन :-
इस काल की अर्थव्यवस्था एक निर्वाह अर्थव्यवस्था थी जिसमें अधिशेष के लिये बहुत कम गुंजाइश थी। इस वजह से करारोपण प्रणाली स्थापित नहीं हो पाई थी तथा अधिकारियों की संख्या सीमित थी। फिर भी राजा की सहायता के लिये निम्नांकित अधिकारियों की व्यवस्था मिलती है

(1) पुरोहित :- यह राजा का मुख्य परामर्शदाता होता था।

(2) सेनानी :- यह सेना का नेतृत्व करता था।

(3) कुलपति - यह परिवार का मुखिया होता था।

(4) विशपति - विश का प्रधान

(5) ब्राजपति - चारागाह का अधिकारी होता था, साथ ही यह कुलप को संगठित कर युद्ध मैदान में ले जाता था।

(6) ग्रामिणी :- यह ग्राम का प्रधान था तथा युद्ध के ग्राम का नेतृत्व करता था।

(7) स्पश - गुप्तचर

(8) दूत - यह विभिन्न राजनीतिक इकाइयों को एक दूसरे के विषय में सूचित करता था।

(9) पुरुष :- यह दुर्ग का अधिकारी होता था

न्याय व्यवस्था -

ऋग्वैदिक काल में विधि तथा न्याय व्यवस्था के संदर्भ में स्पष्ट जानकारी नहीं है। न्याय विवरण का कार्य सम्भवतः पुरोहित की सहायता से राजा ही करता था। इस काल में चोरी, सेंधमारी, डकैती एवं पशु अपहरण मुख्य अपराध

हत्या का दंड द्रव्य के रूप में दिया जाता था। उच्च श्रेणी के व्यक्ति की हत्या का दंड द्रव्य के रूप में 100 गायों तक लिया जाता था जो मृतक की संबंधियों को प्रदान किया जाता था इसके लिये शतदाय (100 गायों का दान) या वरदेय (बदला चुकाने की प्रथा) जैसे विशेषणों का प्रयोग होता था। जो व्यक्ति दिवालिया हो जाता था। उसे ऋणदाता का दास बनाया जाता था। छोटे-छोटे मुकदमों का निर्णय ग्राम पंचायत करती थी।

अर्थव्यवस्था

ऋग्वैदिक आर्य मूलतः ग्रामीण थे। उनका मुख्य पेशा पशुचारण था। इस कृषि द्वितीयक पेशा थी। साहित्यिक और पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर यह स्पष्ट है कि लोग कृषि पर आधारित स्थायी जीवन नहीं जीते थे। आबादी के गतिशील चरित्र के बारे में विश. शब्द से भी सूचना मिलती है, जिसका तात्पर्य है बस्ती। पशुचरण में भी गाय का सर्वाधिक महत्व था। जीवन से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों की अभिव्यक्ति भी गाय के माध्यम से

व्यक्त की जाती थी। जैसे-धनी व्यक्ति को गोमत, द्रविण, रैपान्, राजा को गोपति कहा जाता था। इसी तरह युद्ध के लिये गविष्टि, गेसु, गव्य और गम्य शब्द प्रचलित थे। समय की माप को लिये गोधूलि शब्द का प्रयोग किया जाता था। दूरी के माप के लिये गवयतु। पुत्री को दुहिता तथा अतिथि को भी मांस खाने की वजह से गोहन् कहा जाता था। गाय को पवित्र माना जाता था तथा उसे अघन्य कहा जाता था। ऋग्वेद में एक स्थान पर देवताओं को भी गाय से ही उत्पन्न माना गया है।

गाय के अतिरिक्त आर्य भेड़, बकरियाँ तथा कुत्ते और घोड़े भी पालते थे। वे ऊँट, हाथी आदि जानवरों से भी परिचित थे। गाँवों में चारागाह की सुविधा रहती थी जिसकी देख रेख के लिये व्राजपति नामक अधिकारी रहता था।

ऋग्वैदिक काल में कृषि द्वितीयक पेशा था। ऋग्वेद के 10462 श्लोकों में केवल 24 में कृषि की चर्चा है। यद्यपि कृषि शब्द

का उल्लेख 33 बार पाया गया है, जो अन्य संदर्भों में है।
कृषि से संबंधित सर्वाधिक विवरण प्रथम एवं दशम मंडल में मिलता है। इस समय काठ के हल, फाल और बैलों की सहायता से कृषि कार्य किया जाता था। ऋग्वेद में हल के लिये लांगल अथवा सीर शब्द तथा खेत खेत के लिये तथा उपजाऊ खेत के लिये उर्वरा शब्द का प्रयोग मिलता है। हल वाहे को कीनाश तथा हल से बनी रेखा को सीता कहा जाता था। ऋग्वेद के चौथे मंडल का संपूर्ण मंत्र कृषि कार्य से संबंध है। ऋग्वेद में एक कथन है कि अश्विन देवताओं ने मनु को हल चलाना सिखाया। अन्यत्र यह वर्णन है कि पूषण देवता को भी हल चलाने के लिये प्रार्थना की गई। ऋग्वेद में कुल्या व खनित्रिमा आपः के प्रयोग से सिंचाई के लिये कृत्रिम साधनों के प्रयोग की भी जानकारी मिलती है। सिंचाई में कुएँ का प्रयोग होता था

ऋग्वेद में यव तथा धान्य शब्द का प्रयोग है। यहां यव का मतलब जौ तथा धान्य का मतलब अनाज से है। अनाज मापने का पात्र उर्दर कहा जाता था। अनाथ का कठोर स्थिवि कहलाता था।

ऋग्वैदिक आर्यों का पांच ऋतुओं का ज्ञान था। पशुओं में गाय और घोड़ों को पवित्र माना जाता था। हाथियों की चर्चा पालतू जानवर के साथ नहीं मिलती है। व्याघ्र की चर्चा ऋग्वेद में नहीं मिलती है। ऋग्वेद में नगर की चर्चा नहीं है बल्कि मात्र पुर की चर्चा है।

महत्वपूर्ण शिल्प :-

आर्य मुख्यतः तीन धातुओं का प्रयोग करते थे - सोना, तांबा और कांसा। अयस शब्द यहां तांबे या कांसे का द्योतक है। वस्त्र बनाना प्रमुख शिल्प था। कपड़े बुनने का कार्य नारियां करती थी जिसके लिये ऋग्वेद में सिरी शब्द का प्रयोग हुआ है। ऋग्वेद में कपास शब्द प्रयोग नहीं है। यद्यपि ऊन (ऊर्णा) शब्द का प्रयोग मिलता है। बढ़ई को तक्षण कहा जाता था तथा करघा को तसर। अन्य उद्योग धंधों में लकड़ी की कटाई, धातु

उद्योग था। चर्मन्न - चमड़े का काम करने वाले को कहा जाता था।

चिकित्सा :-

ऋग्वेद में वैद्य के लिये भीषक शब्द का प्रयोग मिलता है।
अश्विन देवता को भीषक कहा जाता था। वे अंधे को नेत्र एवं
पंगु को गति प्रदान करने वाले थे। उन्होंने पशावृज का
अंधापन दूर कर दिया तथा च्यवन ऋषि को पुनः जवान
बना दिया। युद्ध में जब विश्वपाल के पैर कट गये तो उन्होंने
उसके कृत्रिम पैर भी लगाये। ऋग्वेद में कभी-कभी वरुण
तथा रुद्र का भी भीषक के रूप में उल्लेख किया गया है। इस
युग के चिकित्सक औषधि के साथ-साथ जादू-टोने का भी
प्रयोग करते थे।

दास व्यवस्था :-

ऋग्वैदिक काल में दास व्यवस्था प्रचलित थी। इसके दान
देने का उल्लेख प्राप्त होता है। दासों की तुलना में दासियों के
दान के अधिक उल्लेख मिलते हैं। दासी का उपयोग कृषि क्षेत्र
में नहीं होकर घरेलू कार्यों के लिए होता है।

Scanned with CamScanner